|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| 28. September 2025 | | | |
| **26. Sonntag im Jahreskreis C** | | | |
| Erste Lesung: Am 6,1a.4-7; Zweite Lesung: 1 Tim 6,11-16; Evangelium: Lk 16,19-31 | | | |
|  |  | |  |
| Eröffnung: | GL 146, 1-4 | | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 700 | | Wie freue ich der Botschaft mich |
|  |  | |  |
| Kyrie: | GL 437 | | Meine engen Grenzen |
|  | GL 163, 4 | | Herr Jesus |
|  | GL 155 | | Kyrie eleison |
|  |  | |  |
| Gloria: | GL 706 | | Wir beten an und loben dich |
|  |  | |  |
| Antwortgesang: | Psalm 146, 6-10 | |  |
|  | Kehrvers: | |  |
|  | GL 394 | | Laudate Dominum |
|  | oder | |  |
|  | GL 440, 1-5 | | Hilf, Herr, meines Lebens |
|  | GL 448, 1+2!+4 | | Herr, gib uns Mut |
|  |  | | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  | |
|  | Vers: |  | |
|  | *Jesus Christus, der reich war,* | | |
|  | *wurde aus Liebe arm.* | | |
|  | *Und durch seine Armut hat er uns reich gemacht.* | | |
|  |  |  | |
| Credo: | GL 793 | Dich, o Gott | |
|  |  |  | |
| Gabenbereitung: | GL 458 / 459 | Selig seid ihr | |
|  | GL 460 | Wer leben will | |
|  | GL 210 | Das Weizenkorn muss sterben | |
|  | GL 474 | Wenn wir das Leben teilen | |
|  |  |  | |
| Sanctus: | GL 718 | Heilig | |
|  |  |  | |
| Agnus Dei: | GL 498, 1+3 | Das Heil der Welt | |
|  |  |  | |
| Danksagung: | GL 216, 1+2! | Im Frieden dein | |
|  | GL 446, 1-4 | Lass uns in deinem Namen | |
|  |  |  | |
| Schluss: | GL 429, 1+4+5 | Gott wohnt in einem Lichte | |
|  | GL 451 | Komm, Herr, segne uns | |